प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी मंडी के एसिस्टेंट प्रोफेसर (डॉ.) जी. श्रीकांत रेड्डी को रेडियो साइंस में उल्लेखनीय योगदान के लिए यूआरएसआई का 'युवा वैज्ञानिक पुरस्कार'

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (भारत सरकार) के आर्थिक सहयोग से जारी डॉ. रेड्डी के प्रोजेक्ट का संचार एवं गुप्त रखने की तकनीकियों में महत्वपूर्ण उपयोग

मंडी, 25 मार्च 2019 : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी के शिक्षक डॉ. जी. श्रीकांत रेड्डी को 'द इंटरनेशनल युनियन ऑफ रेडियो साइंस (यूआरएसआई)–युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2019' से सम्मानित किया गया है। रेडियो साइंस के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें यह पुरस्कार दिया गया।

आईआईटी मंडी के कम्प्युटिंग एवं इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के एसिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. जी. श्रीकांत रेड्डी को 2019 यूआरएसआई एशिया पैसिफिक रेडियो साइंस कान्फ्रेंस में यूआरएसआई सोसायटी ने यह पुरस्कार दिया। आयोजन 13 मार्च 2019 को नई दिल्ली में किया गया। युवा वैज्ञानिक पुरस्कार ऐसे वैज्ञानिकों/ शोधकर्ताओं को दिया जाता है जिनकी उम्र 35 साल से कम हो और जिनका इलैक्ट्रोमैग्नेटिक वेव्स और प्रॉपगेशन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा हो।

डॉ. जी. श्रीकांत रेड्डी ने इस सम्मान पर अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा, ''यह विशिष्ट पुरस्कार मेरे लिए बड़ा सम्मान है। यह रेडियो साइंस और इलैक्ट्रोमैग्नेटिज्म के क्षेत्र में कार्यरत युवा वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करता है। यह पुरस्कार रेडियो साइंस के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए युवा शोधकर्ताओं को दिया जाता है। आज तीव्र गति संचार और दमदार कनेक्टिवी की बड़ी मांग है। मुझे विश्वास है यूआरएसआई–आरएएससी जैसे सम्मेलन समाज को अत्याधुनिक तकनीक से जोड़ने में बड़ी भूमिका निभाएंगे।''

युवा वैज्ञानिक पुरस्कार रेडियो फ्रीक्वेंसी, माइक्रोवेव एंटेना और पैसिव कम्पोनेंट डिज़ाइन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में डॉ. रेड्डी के उल्लेखनीय कार्यों का सम्मान है। साल 2012 में आईआईटी मुंबई से पीएच.डी. करते हुए डॉ. जी. श्रीकांत ने 'मीमो एंटेना (मल्टी इनपुट, मल्टी आउटपुट) और इंटीग्रेटेड फिल्टर पर शोध कार्य आरंभ किया जो सभी संचार नेटवर्कों में उपयोग किए जाते हैं। इसके बाद 2014 में डॉ. श्रीकांत बतौर रामन–चारपाक फेलो 6 महीनों के लिए युनिवर्सीटी पियरे एण्ड मरी क्यूरी (यूपीएमसी), फ्रांस गए जहां उन्होंने यह अध्ययन किया कि 'माइक्रोवेव का मानव ऊतकों में किस तरह संचार होता है'। भविष्य में इसका उपयोग 'बॉडी एरिया नेटवर्क (बीएएन) कम्युनिकेशन में होगा जिससे डॉक्टरों को मरीज की बीमारी के बारे में जानकारी मिल जाएगी चाहे वे मरीज से दूर बैठे होंगे। साल 2016 में स्टेट युनिवर्सीटी न्यूयॉर्क (ओस्वेगो कैम्पस) में पोस्ट डॉक्टोरल फेलोशिप में डॉ. श्रीकांत ने 'कवर्ट वेइकुलर एंटेना' अर्थात् वाहनों के लिए छिपे एंटेना की डिज़ाइन तैयार करने का कार्य किया।

सन् 2012 में डॉ. जी. श्रीकांत रेड्डी ने **'रेडियो फ्रीक्वेंसी और माइक्रोवेव एप्लीकशंस के लिए ब्राड बैण्ड फ्रीक्वेंसी सलेक्टिव स्ट्रक्चर (एफएसएस) की डिज़ाइन'** पर कार्य शुरू किया। इस शोध का लाभ संचार एवं गुप्त रखने की तकनीक के उपयोग में होगा। डॉ. श्रीकांत को यह प्रोजेक्ट 'आरंभिक कॅरियर शोध अनुदान

पुरस्कार (ईसीआरए)' के तौर पर दिया गया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार ने इस पुरस्कार के तहत उन्हें 3 वर्षों की अवधि के लिए 51.97 लाख रु. का अनुदान दिया।

एफएसएस के सार्वजनिक उपयोग के क्षेत्र में शोध के लिए डॉ. श्रीकांत ने नेशनल एयरोस्पेस लैबरेटरी (एनएएल), बंगलुरु में इलैक्ट्रोमैग्नेटिक सेंटर के डॉ. शिव नारायण से सहयोग करार किया है। दोनों मिल कर आईआईटी मंडी के एक पीएच.डी. छात्र का मार्गदर्शन भी कर रहे हैं।

'एपीआरएएससी–2019' के अवसर पर डॉ. रेड्डी के साथ पूरे एशिया प्रशांत और अन्य क्षेत्रों के 20 अन्य शोधकर्ताओं को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस साल नई दिल्ली, भारत में आयोजित इस कार्यक्रम में रेडियो साइंस और वेव प्रोपगेशन के कई अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वक्ता और प्रौद्योगिकी विशेष भाग लेने आए।

###

इंटरनेशनल यूनियन ऑफ रेडियो साइंसेज़ (URSI) का परिचय

रेडियो विज्ञान में इलैक्ट्रोमैग्नेटिकफील्ड और तरंगों (वेव्स) के सभी पहलुओं की जानकारी दी जाती है और गहन अध्ययन किया जाता है। इंटरनेशनल यूनियन ऑफ रेडियो साइंसेज़ (यूनियन रेडियो–साइंटिफिक इंटरनेशनल) विज्ञान परिषद के तहत कार्यरत एक गैर–सरकारी और गैर–आर्थिक लाभ संगठन है। इसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रेडियो विज्ञान के अध्ययन, शोध, उपयोग, वैज्ञानिक आदान–प्रदान और संचार के लिए प्रोत्साहन और सहयोग देना है। अधिक जानकारी के लिए कृपया देखें : http://aprasc2019.com/the-international-union-of-radio-science-ursi/

आईआईटी मंडी का परिचय (http://www.iitmandi.ac.in/)

आईआईटी मंडी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा, ज्ञान सृजन एवं इनोवेशन के क्षेत्र में तेजी से उभरता एक प्रमुख संस्थान है। जुलाई 2009 में विद्यार्थियों के पहले बैच से आरंभ कर आज आईआईटी के लिए 1,300 विद्यार्थी, 110 फैकल्टी, 150 स्टाफ होना बड़ी उपलब्धि है। इसके विद्यार्थियों में 274 पीएचडी, 46 एमएस और 17 आई–पीएच.डी. रिसर्च स्कॉलर हैं। संस्थान के पूर्व विद्यार्थियों की संख्या बढ़ कर 850 हो गई है।

संस्थान बी.टेक./ एम.टेक./एम.एससी. एवं एम.एस/पीएच.डी. के विद्यार्थियों की संख्या बढ़ा कर 2029 तक 5,000 करने का लक्ष्य रखता है। आईआईटी मंडी एक पूर्ण आवासीय संस्थान है जिसके सभी विद्यार्थियों और 95 प्रतिशत शिक्षकों का कैम्पस के अंदर निवास होगा। साथ ही, 1.5 लाख वर्ग मी. निर्माणाधीन है।

सन् 2010 से अब तक आईआईटी मंडी के शिक्षक 85 करोड़ रु. से अधिक के लगभग 180 प्रोजेक्ट हासिल कर चुके हैं। स्थापना के केवल एक दशक की अवधि में संस्थान के कामंद स्थित कैम्पस में कई लैब और शोध केंद्र स्थापित किए गए हैं। लगभग 50 करोड़ के निवेश से स्थापित एडवांस्ड मटीरियल्स रिसर्च सेंटर (एएमआरसी) में मटीरियल्स के गुणों के वर्गीकरण (कैरेक्टराइजेशन) के लिए आवश्यक आधुनिक उपकरण हैं जिनका लाभ दवा आपूर्ति, विद्युत, इलैक्ट्रॉनिक्स एवं जीव वैज्ञानिक उपयोगों में होगा। सन् 2013 में गठन के समय से अब तक एएमआरसी ने 200 से अधिक शोध पत्रों के प्रकाशन में योगदान दिया है। आईआईटी मंडी में शोध के लिए 'क्लास 100 क्लीन रूम' जैसी अत्याधुनिक सुविधाएं हैं। यह भारत का पहला और

विश्व स्तरीय केंद्र है। 2017 में भारत सरकार के जैवतकनीकी विभाग ने आईआईटी मंडी को 10 करोड़ रु. के प्रतिष्ठित फार्मजोन प्रोजेक्ट के नेतृत्व के लिए चुना।

संस्थान में आपस में जुड़े विषयों के अध्ययन–अध्यापन का परिवेश है जो डिज़ाइन–ओरियंटेड है। बी. टेक. के पाठ्यक्रम में पहले साल से चौथे साल तक रीयल–वर्ल्ड टीम प्रोजेक्ट पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। समाज की जरूरतों के मद्देनजर टीम भावना से काम करने पर जोर दिया जाता है। आईआईटी मंडी के पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग मानवीकी है जो इसे समाज के अधिक करीब रखता है। जर्मनी में टीयू 9 के साथ मई 2011 से आईआईटी मंडी के कई सहमति करार पर कार्य जारी हैं। अमेरिका के वॉरसेस्टर पॉलीटेक्निक इंस्टीट्यूट के विद्यार्थी 2013 से हर वर्ष आईआईटी मंडी आते हैं।

सन् 2016 में आरंभ आईआईटी मंडी का कैटलिस्ट हिमाचल प्रदेश का पहला टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्युबेटर है। आईआईटी मंडी की एक अन्य पहल 'इनैबलिंग वीमेन ऑफ कामंद' (ईडब्ल्यूओके) का मकसद महिलाओं को ग्रामीण स्तर के कारोबार शुरू करने के लिए कौशल प्रशिक्षण देना है।

Media contact for IIT Mandi:

IIT Mandi Media Cell - mediacell@iitmandi.ac.in/ Landline: 01905 267832

Akhil Vaidya – Footprint Global Communications
Cell: 9882102818 / Email ID: akhil.vaidya@footprintglobal.com
Samriddhi Bhal - Footprint Global Communications
Cell: 7905887524 / Email: samriddhi.bhal@footprintglobal.com
Palak Sakhuja - Footprint Global Communications
Cell: 9582338333 / Email: palak.sakhuja@footprintglobal.com
Shoma Bhardwaj - Footprint Global Communications
Cell: 9899960763/ Email: shoma.bhardwaj@footprintglobal.com
Bhavani Giddu - Footprint Global Communications
Cell: 9999500262 / Email: bhavani.giddu@footprintglobal.com